tsaMj xSjcjkcjh dk vkbZuk dksfoM& 19

कोविड– 19 अपने साथ एक महामारी तो लेकर आया ही है लेकिन साथ ही औरतो, लडकियों और हाशिए पर रहने वाले लोगो के लिए मौत भी लेकर आया है।

लॉकडाउन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लोगो को सामाजिक दूरी नही बल्कि शारीरिक दूरी बनानी है। यह प्रक्रिया अलग अलग देशो में अलग अलग दिखाई दे रही है। लॉकडाउन का मतलब है घर परिवार में कैद रहो , कही आओ जाओ नहीं। पर इसका अर्थ यह नही कि आप अपना सारा बल घर की औरतों पर लगा दो। लॉक होने को कहा था न कि हुकुम चलाने या अपनी ताकत दिखाने को कही थी। यह भी सच है कि प्रशासन ने लॉकडाउन करते समय क्या औरतों के विषय में सोचा? क्या हम अपनी पितृसत्तामक समाज को यह बता पायें कि औरतें भी बराबर की हकदार हैं। सरकार या प्रशासन को नही मालूम था अपने पितृसत्तामक समाज का चेहरा? क्या नही जानते थे कि औरतें अपने घरो में कैसे जी रही हैं! क्या **NCRB** का डाटा सरकार के पास नही है जहां घरेलू हिंसा के मामले दर्ज है?

सरकार ने लॉकडाउन कर दिया ओर सभी को घरो में बंद कर दिया और ज्यादातर सेंवाए बंद कर डाली। लेकिन सवाल ये है कि लॉकडाउन किन शर्तो पर किया गया और किन्हें हिंसा के मुंह में डाल दिया। सरकार ने एक लक्ष्मण रेखा खींच दी ओर कहा घरों में कैद हो जाओ। कैद होना का मतलब है कि सुविधाओं से वंचित हो जाना। ?kj ds vanj fdlds lcls igys lqfo/kkvksa ls ofpr gksuk gksxk\ bl iz'u dk fopkjuk gksxkA

क्या सरकार के पास घरो के अंदर के ताने बाने की समझ है? किसी भी समाज व वहां की व्यवस्था को समझने के लिए घर की इकाई की समझ का होना बहुत जरूरी है। हमारे देश में घर कैसा है? घर में संसाधन क्या हैं? क्या हर किसी के पास छत है? क्या औंरतों के पास निर्णय लेने का हक है? क्या हमारा समाज औरत को बराबर का दर्जा देता है? क्या हमारी व्यवस्थाओं ने सोचा कि परिवार की परिभाषा हमारे देश में क्या है? क्या हमारे रिश्ते बराबरी के हैं? ऐसे कई सवाल हमारे सामने हैं। भविष्य की राह में इन प्रश्नो का जवाब निकालना बहुत जरूरी है।

ये तो हम ने इच्छा ओर बेमन से मान लिया कि हम सार्वजनिक स्थलो पर नही जायेंगे ओर सरकार ने मनवा भी लिया। हमने देखा भी कि कैसे लोग घरो के अंदर रह कर सरकार के आदेशों का पालन कर रहे हैं। जिन्होने नही किया उन्होने उस का दंड भी पाया। घरेलू हिंसा अधिनियम कानून 2005 में आया, पर क्या इसी तरह से उस कानून का भी पालन हुआ। इस लॉकडाउन में राष्ट्रीय महिला आयोग ने जब यह रिर्पोटिग की कि इस दौरान घरेलू हिंसा के मामले ज्यादा आयें तो सभी का थोडा ध्यान औरतो की तरफ भी चला गया।

?kjsyw fgalk gekjs lekt dks fy, dksbZ ubZ ckr ugh gSA cl bl le; QdZ ;gh Fkk fd firLkRrked rkdrks dks T;knk ekSdk feyk vkSj mUgksus viuh okj efgykvksa ij djuk 'kq: dj fn;kA इस समय इनको रोकने वाला कोई था नही और इन ताकतों ने इस बात का पूरा फायदा उठाया। कई और कारणो से ये ताकतें ज्यादा शाक्तिशाली हुई।

जिस समाज में औरत को देवी माना जाए और उस से उम्मीद की जाए कि वह मुंह ना खोले। जिस समाज में वह गाय जैसी हो जिस को पीटा जाए पर वह दर्द की शिकायत ना करें। जब इसी समाज ने उसे चुप रहने और शोषित करने वाले को शोषण के मौके दिए तो अजीब क्या है! इस तरह के लॉकडाउन में इन घटनाओं को बढ़ना ही था।

सवाल यह है कि इस लॉकडाउन को करने से पहले क्या सरकार यह सोच पाई कि घरो में जो गैरबराबरी वाले रिश्ते हैं उन रिश्तों की आड में लॉकडाउन का क्या होगा? आम समय में वैसे भी औरतें अपनी मार की परवाह नही करती उन को लगता है कि हिंसा उनकी नियति का हिस्सा है इसलिए वह हिंसा झेलती हैं। उन को बचपन से यही तो इस समाज ने सिखाया कि पहले दूसरो के लिए सोचो फिर अपने सवाल उठाओ। आम समय में भी औरतें घर के मामलो को कम बाहर ले कर आती है। एक थप्पड, गाली, घमकी, ताने आदि इन सब को मामूली बात मानती है। मामले तब दर्ज होते हैं जब सर से ऊपर पानी चला जाता है। जो केस लॉकडाउन में आए वह केस वो थे जिनमें सांस लेना मुश्किल था। सोचे अगर औरतें हिंसा को छोटा बडा करके या घर की इज्जत के आईने में ना देखें तो हर थाने में कितने रजिस्टर रोज के भरे जायें ओर कानून को सांस लेने का भी समय ना मिले।

इसी लॉकडाउन में घरो में औरतो को मानसिक तनाव से गुजरना पडा। आम दिनो में जो वह अपना दर्द अपनी सहेली या पडोसन से बांट लेती थी पर इस समय पर वह कहां जाए ओर किसको कहें अपना दर्द। अगर घर छोटा है तो कहां से मां को चुपके से फोन करे और अपने हालात बतायें। वैसे भी हमारे देश में कितनी औरतो के पास उनके नाम का फोन है। इस दौरान घरेलू हिंसा के मामले उन औरतों के आयें जिन 29 प्रतिशत औरतों के पास इन्टरनेट की सुविधा व पहुंच थी। जिन औरतों के फोन में पैसा था वही बचाव के लिए फोन कर पाईं। ज्यादातर के पास फोन हैं नही अगर हैं तो उस फोन को चार्ज करने के लिए पैसा नही है।

जब बच्चे भूखे हों तो कोई ओर दर्द नहीं सताता है। खाली पेट रहना भी हिंसा है ओर इस हिंसा की ज़िम्मेदारी तो प्रशासन को लेनी ही होगी। आम समय में भी क्या हम जान पाते हैं कि सडको पर और घरो में औरत के पेट में कितना खाना गया, ये तो फिर भी संकट का समय है। अक्सर हम देखते हैं कि परिवार में पुरुष ओर बच्चे पहले खाना खाते हैं उसके बाद जो बच जाता है वह औरतों के हिस्से में आता है। क्या हम समझ सकते हैं कि इस संकट के समय जब ज्यादातर के पास खाने को नही है ओर राहत के तौर पर जो मिल रहा है उसमे से औरत की थाली तक कितना खाना पहुंच पा रहा होगा? जब घरो में पैसा कम है तो किसकी जरूरतों को दबा दिया गया है और भविष्य में किसको प्राथमिकता मिलेगी। जब औरत की थाली में खाना ही नही है तो अनिमिया ओर कुषोषण की शिकार तो होगी ही । आम समय वाली स्थिति में 53 प्रतिशत औरतो में अनिमिया पाया जाता है और प्रसव के समय पर 74 प्रतिशत के आस पास ,शायद इससे हम अब ये अंदाजा लगा सकते हैं कि लॉकडाउन के समय यह प्रतिशत कितना बढ़ा होगा। इस लॉकडाउन में यही नजर आया कि घर जैसी महत्वपूर्ण इकाई के अंदर रहने वाली औरतें इस लॉकडाउन में नदारद थीं। उनके बारे में कहीं कुछ सोचा ही नही गया। जब यह लॉकडाउन हुआ तब प्रशासन ने महिला के मुददे को आपात सेंवाओं में क्यो नही डाला। यह भी तो हो सकता था कि पुलिस विभाग में एक अलग से ^?kjy fglk l cpko* ;fuV बनता और उसमें उन एनजीओ. को शामिल किया जाता जो महिला हिंसा के मुददो पर काम करती हैं। जो ऐसी घटनाओं पर तत्काल कार्रवाई कर सकती हों। ऐसे कई अन्य उपाय थे जिनसे औरतो को राहत पहुंचाया जा सकता था।

घरेलू हिंसा केवल घर अंदर पैदा होने वाली परिस्थितियो से नही उपजती हैं बल्कि बाहरी तत्व इसमें शामिल होते हैं। हम ये देखते हैं कि औरतें घरों के अंदर मजदूरों की तरह काम करती हैं, पर उस काम का उन्हें कोई पैसा नहीं मिलता है। वहीं दूसरी तरफ घर के बाहर की उनकी मजदूरी, जो की 81 प्रतिशत असंगठित हिंस्सों में आता है, वह भी इस लॉकडाउन की वज़ह से उनके हाथ से निकल गया। लेकिन बिना वेतन वाली मजदूरी अभी भी नहीं गई। वेतन या आय ना होने से भी घर के अंदर हिंसा बढी । पहले जब औरत कुछ कमा कर लाती थी तो उसपर काम का दोहरा बोझ तो पड़ता था लेकिन साथ ही थोड़ा बहुत परिवार के फैसलों में हिस्सेदारी करने का मौका भी मिल जाता था। लेकिन जब नौकरी गई तो वह ताकत भी गई और साथ ही उसका आवाजाही पर भी रोक लग गई। अब वो बिना किसी कारण के अपनी इच्छा से घर से बाहर नही जा सकती। औरत की गतिशीलता पर अंकुश ज्यादा लगने शुरु हो गए हैं। अगर आय कि भी बात करे तो हम पाते हैं कि औरतों की आय पुरुषो के मुकाबले 34 प्रतिशत कम पाई जाती है (ILO के अनुसार)

कोविड के इस समय पर भी किसको पहले बचाया जा रहा है यह भी एक देखने व समझने का पहलू है। Fornt Line Worker की बात करें तो उसमें भी ज्यादातर औरते आती हैं जो निचले पायदान पर काम कर रही हैं उन के लिए कि PPE kit मौजूद नही है। Fornt Line Worker का वर्गीकरण करे तो हम देख पाएगे कि उपर वाले पायदान पर ज्यादातर पुरुष डॉक्टर मिलेंगे क्योकि इस पितृसत्तामक समाज में लडको को हर क्षेत्र में मौके ज्यादा मिले। उसके

बाद नर्स,सफाई कर्मचारी, आशा वर्कर आदि आते है। डॉक्टर पूरे समय मरीजो के पास नही होते हैं वह एक खास समय पर आकर मरीजों की जांच करते हैं, और चले जाते हैं। पर मरीजो के पास लगातार नर्स, सफाई कर्मचारी, आशा वर्कर इन लोगो का काम होता है और इन पदो पर ज्यादातर महिलाएं होती हैं। इन औरतो के लिए अभी तक कहां है PPE kit। ना घर में सुरक्षा दी गई ना ही बाहर। तो हम ये मान लेते हैं कि समाज ओर सरकार को इनकी जरूरत सिर्फ अपने फायदे तक के लिए ही है। हम सुरक्षित शहर की बात करते हैं पर हमारे Agenda में महिला है ही नही।

अगर हम आने वाले समय की बात करें तो शायद हम देख पाऐगे कि कैसे औरतो को अब घर में रहने के लिए मजबूर होना पडेगा। जिस समाज में वैसे ही औरतो की आवाजाही पर रोक टोक है वहां पर अब कोविड के बाद उन पर और चौकसी मौजूद होगी। नौकरियां जाने का खतरा सबसे ज्यादा औरतो को झेलना पडेगा क्योकि घर में अब जो भी बीमार होगा उसकी सेवा के लिए घर की और को ही देखा जायेगा। हमारे आंकडे बताते हैं कि 29 प्रतिशत औरतें ही इन्टरनेट का प्रयोग कर पाती हैं बाकि नहीं, तो इसका साफ मतलब है कि Work from Home जैसी सुविधा पर 71 प्रतिशत औरतों हक नहीं है। औरतों के हाथ में अब पैसा नही होगा। इसका एक मतलब यह भी है कि घर में पैंसे की किल्लत के चलते औरतो ओर लडकियों की जरुरतो पर अब कम खर्च होगा। दहेज से बचने के लिए जबरदस्ती विवाह और बाल विवाह बढ़ेगे।

कोरोना के इस भय को इतना फैलाया गया है कि हम भविष्य के बारे में सोच ही नही पा रहे हैं। ज्यादातर का ध्यान नही जा रहा कि इस दौर में औरतें और बच्चियों की हालत और बिगड़ने वाली है। इस समय इस दिशा में भी सोचने की जरूरत है कि हम अपने अधिकारो की बात करें। आज के इस दौर में हमारे रिश्ते बराबरी के कैसे बनें इस ओर घ्यान देना होगा। पुरुषों को सोचने की जरूरत है कि लॉकडाउन सब के लिए है। वह अपनी सत्ता का दुरुपयोग ना करें। यही समय है जब हम अपने बच्चो को हिंसा मुक्त वातावरण कैसे बनाया जा सकता है इसका अभ्यास कर के दिखा सकते हैं। जब पुरुष घर में बच्चो के साथ समय बिता कर, घर का काम कर, अपनी जीवनसाथी के साथ प्यार, हिस्सेदारी की चर्चा फैला कर ना केवल अपने बच्चो को बल्कि समाज में बराबरी का संदेश फैला सकते हैं। अपने बच्चों के हीरो बन सकते हैं।

e/k ckyk

tkxkjh vkj L«kh efDr lxBu